शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी

रिसाला नं. 79

Buddha Pujari (Hindi)

बुद्ध पुजारी

दुन्या की बदहाली

आग़ाज़े दा'वते इस्लामी

ग़ारे हिरा में इबादत

मुसल्मान होते ही नेकी की दा'वत की धूम

नाख़ुन काटने के 9 म-दनी फूल

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टैड हाउस, औलिया की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 99271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़: शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजु़र्गी वाले।

(المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम **1428** हि.

बुढ्ढा पुजारी

येह रिसाला (**बुढ्ढा पुजारी**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बुड्ढा पुजारी[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 स-फ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत के बे शुमार मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मर्तबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए । सज्दे को इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रूह़े मुबा-रका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो । चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा । जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : " ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ?" मैं ने अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : "जिब्रईले

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) कराची में होने वाले यकुम रबीउ़न्नूर शरीफ़ (1430 हि.) के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

अमीन ने मुझ से कहा : "क्या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह बात खुश नहीं करती कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है कि जो तुम पर **दुरूदे पाक** पढ़ेगा मैं उस पर **रह़मत** नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर **सलाम** भेजेगा मैं उस पर **सलामती** उतारूंगा।"

(مسندِ امام احمد ج١ ص٤٠٦ حدیث١٦٦٢ دارالفکر بیروت)

ज़माने वाले सताएं, दुरूदे पाक पढ़ो
जहां के ग़म जो रुलाएं, दुरूदे पाक पढ़ो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले अ़रब का दीन यूं तो दीने इब्राहीमी عَلَيْهِ السَّلَام था मगर इस की अस्ल सूरत बिल्कुल बदल दी गई थी। तौह़ीद की जगह शिर्क ने और खुदाए वाह़िद جَلَّ جَلَالُهٗ की इबादत की जगह बुत परस्ती ने ले ली थी। उन में कुछ तो बुतों को अपना खुदा समझते थे तो बा'ज़े दरख़्तों को, चांद, सूरज और सितारों को पूजते थे और कुछ कुफ़्फ़ारे ना हन्जार, फ़िरिश्तों को खुदा عَزَّ وَجَلَّ की बेटियां क़रार दे कर उन की पूजा पाट में मस्रूफ़ थे। किरदार की पस्ती का आ़लम येह था कि वोह शबो रोज़ शराब ख़ोरी, क़िमार बाज़ी (या'नी जुवा) ज़िनाकारी और क़त्लो ग़ारत गरी में मश्ग़ूल रहते थे। उन की क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) का इस बात से बखूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि लड़कियों

को पैदा होते ही ज़िन्दा दरगोर (या'नी ज़िन्दा दफ़्न) कर दिया करते और बसा अवक़ात **इन्सानों को ज़ब्ह़** कर के उस को बुतों पर बत़ौरे चढ़ावा पेश करते। इस वह़शियाना ह़-र-कत की सूरत कुछ इस त़रह़ होती कि मख़्सूस अवक़ात में भेंट चढ़ाने के लिये किसी **सफ़ेद ऊंट या इन्सान** को लाया जाता, फिर वोह अपने **मु-तबर्रक** मक़ाम के गिर्द **भजन** गाते हुए तीन बार त़वाफ़ करते, इस के बा'द सरदारे क़ौम या **बुड्ढा पुजारी** बड़ी फुरती के साथ उस भेंट (या'नी इन्सान या ऊंट जो भी हो) पर पहला वार करता और उस का कुछ ख़ून पीता। इस के बा'द ह़ाज़िरीन उस **सफ़ेद ऊंट या इन्सान** पर टूट पड़ते और उस की तिक्का बोटियां कर के उस को कच्चा ही कच्चा खा डालते ! अल ग़रज़ अ़रब में हर त़रफ़ वह़शत व बर-बरिय्यत का दौर दौरा था। लड़ाइयों में आ-दमिय्यों को ज़िन्दा जला देना, औ़रतों का पेट चीर डालना, बच्चों को ज़ब्ह़ करना, उन को नेज़ों पर उछाल देना उन के नज़्दीक मा'यूब न था।

दुन्या की बदह़ाली

येह ह़ालत सिर्फ़ अ़रब के साथ ही मख़्सूस न थी बल्कि तक़रीबन पूरी दुन्या में तारीकी छाई हुई थी। चुनान्चे **अहले फ़ारस** (या'नी ईरानी) अक्सर आग की पूजा करने और अपनी माओं के साथ वत़ी करने में मश्ग़ूल थे। ब कस्रत तुर्क शबो रोज़ बस्तियां उजाड़ने और लूटमार करने में

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मसरूफ़ थे और बुत परस्ती और लोगों पर ज़ुल्मो जफ़ा उन का **वतीरा** था। हिन्दुस्तान के कसीर अफ़राद बुतों की पूजापाट और ख़ुद को आग में जला देने के इलावा कुछ न जानते थे। बहर कैफ़ हर त़रफ़ कुफ़्र व ज़ुल्मत का घटा टोप अंधेरा छाया हुवा था। काफ़िर इन्सान बदतर अज़ ह़ैवान हो चुका था। चुनान्चे

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत हो गई

इस आ़लमगीर ज़ुल्मत में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो[2] जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर, आमिना के पिसर, ह़बीबे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुल जहां के लिये हादी व रहबर बन कर वाक़िअ़ए अस्ह़ाबे फ़ील के पचपन (55) दिन के बा'द 12 रबीउ़न्नूर ब मुत़ाबिक़ 20 एप्रिल 571 सि.ई.[1] बरोज़ पीर सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त कि अभी बा'ज़ सितारे आस्मान पर टिमटिमा रहे थे, चांद सा चेहरा चमकाते, कस्तूरी की ख़ुश्बू महकाते, ख़तना शुदा, नाफ़ बुरीदा, दोनों[2] शानों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत दरख़्शां, सुर-मगीं आंखें, पाकीज़ा बदन दोनों[2] हाथ ज़मीन पर रखे हुए, सरे पाक आस्मान की त़रफ़ उठाए हुए दुन्या में तशरीफ़ लाए।

(اَلْمَوَاهِبُ اللَّدُنِّيَّة لِلْقَسْطَلَانِی ج۱ ص۶۶۔۷۵ وغیرہ دارالکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 26 सफ़्ह़ा 414 मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह़ और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया
दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया
ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने ना ख़ुदाई की ख़ुद इन्सानी सफ़ीने की
कि रह़मत बन के छाई बारहवीं शब इस महीने की
जहां में जश्ने सुब्ह़े ईद का सामान होता था
उधर शैत़ान तन्हा अपनी नाकामी पे रोता था
सदा हातिफ़ ने दी ऐ साकिनाने ख़ित़्त़ए हस्ती !
हुई जाती है फिर आबाद येह उजड़ी हुई बस्ती
मुबारक बाद है उन के लिये जो ज़ुल्म सहते हैं
कहीं जिन को अमां मिलती नहीं बरबाद रहते हैं
मुबारक बाद बेवाओं की ह़सरत ज़ा निगाहों को
असर बख़्शा गया नालों को फ़रियादों को आहों को
ज़ईफ़ों बे कसों आफ़त नसीबों को मुबारक हो
यतीमों को ग़ुलामों को ग़रीबों को मुबारक हो
मुबारक ठोकरें खा खा के पैहम गिरने वालों को
मुबारक दश्ते ग़ुरबत में भटकते फिरने वालों को
मुबारक हो कि दौरे राह़तो आराम आ पहुंचा
नजाते दाइमी की शक्ल में इस्लाम आ पहुंचा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुर-सलीं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **तशरीफ़ ले आए**
जनाबे रह़्मतुल्लिल आ-लमीं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **तशरीफ़ ले आए**

बसद अन्दाज़े यक्ताई ब ग़ायत शाने ज़ैबाई
अमीं बन कर अमानत आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **की गोद में आई**

दुन्या में तशरीफ़ लाते ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सज्दा किया। उस वक़्त होंटों पर येह दुआ जारी थी **:** **رَبِّ هَبْلِیْ اُمَّتِیْ** या'नी परवर्दगार ! मेरी उम्मत मुझे हिबा कर दे।

رَبِّ هَبْلِیْ اُمَّتِیْ उम्मती कहते हुए पैदा हुए
ह़क़ عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि बख़्शा اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

ग़ारे ह़िरा में इ़बादत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले अ़रब की भारी अक्सरिय्यत के ह़ालात आप सुन चुके। ऐसी वह़्शी क़ौम में रहते हुए भी हमारे मक्की म-दनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी किसी मजलिसे लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद) में शरीक नहीं हुए और सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते सितूदा सिफ़ात हर क़िस्म की बुराई से दूर ही रही। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अख़्लाक़े ह़मीदा से मुत्तसिफ़ और सिद्क़ो अमानत में इस क़दर मु-तआ़रिफ़ हुए कि ख़ुद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ौम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (کنزالعمال)

को "सादिक़" और "अमीन" के लक़ब से याद करती थी । सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ग़ारे हिरा** में (जो मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से मिना शरीफ़ को जाते हुए बाईं त़रफ़ को आता है) क़ियाम फ़रमाते और वहां कई कई रोज़ तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल रहते ।

इज़्हारे नुबुव्वत

शाहे मक्कतुल मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ जब चालीस40 साल की हुई उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इज़्हारे नुबुव्वत की इजाज़त मिली । वरना सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो उस वक़्त भी नबी थे जब कि अभी ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ (या'नी पैदाइश) भी न हुई थी । चुनान्चे नबिय्ये मोह़तरम, **नूरे मुजस्सम, रसूले मुह़्तशम,** शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में अ़र्ज़ की गई : **مَتٰى كُنْتَ نَبِيًّا** या'नी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कब से नबी हैं ? फ़रमाया : **وَاٰدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَد** या'नी (मैं तो उस वक़्त भी नबी था जब कि अभी) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) रूह़ और जिस्म के दरमियान थे ।

(اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحاكِم ج٣ص٥٠٨ حديث٤٢٦٥ دارالمعرفة بيروت)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

आदम का पुतला न बना था, जब भी वोह दुन्या में नबी थे

है उन से आग़ाज़े रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

पहली वह़्य

22 फ़रवरी 610 सि.ई. की वोह अ़ज़ीम साअ़त आई जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़स्बे मा'मूल **ग़ारे ह़िरा** को अपनी ब-र-कतों से नवाज़ रहे थे । उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पहली बार येह आयाते मुक़द्दसा बत़ौरे वह़्य ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए :

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ(۱) خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍۚ(۲) اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُۙ(۳) الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِۙ(۴) عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْؕ(۵) (پ۳۰ علق ۱،۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के नाम से जिस ने पैदा किया आ-दमी को ख़ून की फटक से बनाया । पढ़ो और तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ ही सब से बड़ा करीम है जिस ने क़लम से लिखना सिखाया । आ-दमी को सिखाया जो न जानता था ।

फिर कुछ अ़र्से बा'द येह आयाते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ﴿۱﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ۪ۙ﴿۲﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۪ۙ﴿۳﴾ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۪ۙ﴿۴﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۪ۙ﴿۵﴾ (پ۲۹،المدثر۱،۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ बालापोश ओढ़ने वाले ! खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ और अपने रब عَزَّوَجَلَّ ही की बड़ाई बोलो और अपने कपड़े पाक रखो और बुतों से दूर रहो ।

आग़ाज़े दा'वते इस्लाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अब इस हुक्म "**قُمْ فَاَنْذِرْ**" या'नी "खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ" से सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डराना और उन तक दा'वते इस्लाम पहुंचाना फ़र्ज़ हो चुका था मगर हुनूज़ अ़लल ए'लान दा'वते इलल्लाह عَزَّوَجَلَّ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाने) का हुक्म न था । लिहाज़ा आमिना के लाल, महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़िलहाल बा ए'तिमाद लोगों में चुपके चुपके सिल्सिलए तब्लीग़ का आग़ाज़ फ़रमाया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नेकी की दा'वत पर कई मर्द व औ़रत ईमान ले आए । **मर्दों** में सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ, **लड़कों** में **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात,

अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم, ख़्वातीन में **उम्मुल मुअमिनीन ख़दी-जतुल कुब्रा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا, **आज़ाद शुदा ग़ुलामों** में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ, **ग़ुलामों** में ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़ब्शी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ईमान ले आए।

मुसल्मान होते ही नेकी की दा'वत की धूम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ईमान लाते ही नेकी की दा'वत की धूमें मचानी शुरूअ़ कर दी। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की **इन्फ़िरादी कोशिश** से पांच[5] वोह ह़ज़रात मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए जिन का शुमार अ़-श-रए मुबश्शरह में होता है। इन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ। "अ़-श-रए मुबश्शरह" उन दस[10] सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कहते हैं जिन को हमारे मक्की म-दनी मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या ही में जन्नत की बिशारत इनायत फ़रमा दी थी। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب و ترہیب)

वोह दसों जिन को जन्नत का मुज़्दा मिला

उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

काश ! हम भी नेकी की दा'वत देने वाले बनें

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को नेकी की दा'वत का किस क़दर जज़्बा था कि दामने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पनाह मिलते ही फ़ौरन दूसरों को भी सरकारे मोह्तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम से वाबस्ता करने की धुन लग गई। उन्हें कितना ज़बर दस्त एह्सास था, कितनी क़द्र थी इस्लाम की, ऐ काश ! हमारे दिल में भी नेकी की दा'वत की अहम्मिय्यत जा गुज़ीं हो जाए। काश ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों के मज़्हर जन्नत की त़रफ़ अपने उन भोले भाले इस्लामी भाइयों को भी ले चलने की कोशिशें तेज़ तर कर दें जो गुनाहों की अंधेरी वादियों में भटक रहे हैं। ऐ काश ! हमें भी फ़िरंगी फ़ेशन की यलग़ार में घिरे हुए मुसल्मानों को **मदीने के ताजदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतों की त़रफ़ बुलाने का जज़्बा नसीब हो जाए। इस म-दनी काम या'नी **नेकी की दा'वत** को आ़म करने का एक मुअस्सिर ज़रीआ़ **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** भी है। दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में हफ़्ते में एक दिन मख़्सूस कर के दुकानों, घरों वग़ैरा पर **नेकी की**

दा'वत पेश की जाती है । बा'ज़ इस्लामी भाई हफ़्ते में दो बार, तीन बार भी बल्कि रोज़ाना भी देते हैं और बा'ज़ आक़ा के दीवाने तो जब देखा तन्हा ही **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाते रहते हैं ! आइये तन्हा नेकी की दा'वत देने या'नी "**इन्फ़िरादी कोशिश**" करने के मु-तअ़ल्लिक़ एक ईमान अफ़्रोज़ म-दनी बहार सुनते चलें चुनान्चे

एक हेरोइन्ची की आपबीती

बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े "कोरंगी" के एक इस्लामी भाई ने जो कुछ ह़लफ़िया (या'नी ब क़सम) बयान दिया उस का ख़ुलासा अ़र्ज़ करता हूं **:** तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के कोरंगी में होने वाले आख़िरी **तीन[3] रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** का वाक़िआ़ है । इस के बा'द येह इज्तिमाअ़ मदीनतुल औलिया (मुलतान शरीफ़) में मुन्तक़िल कर दिया गया । हम चन्द दोस्त रस्मी त़ौर पर इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर तो हो गए मगर बयानात की ब-रकात छोड़ कर रात इज्तिमाअ़ गाह के बाहर एक जगह बैठ कर ख़ूब सिगरेट के कश और गपशप लगाने में मश्ग़ूल हुए इसी में **जिन्न भूत के सन्सनी ख़ेज़ वाक़िआ़त** भी छिड़ गए, जिस की बिना पर कुछ डरावना सा माह़ोल बन गया । इतने में सब्ज़ इमामे वाले एक उधेड़ उ़म्र के इस्लामी भाई ने क़रीब आ

कर हमें सलाम किया और फ़रमाने लगे **:** अगर इजाज़त हो तो कुछ अ़र्ज़ करूं ! हम ने कहा **:** फ़रमाइये ! उन्हों ने बड़े हमदर्दाना लहजे में कहा **:** आप ह़ज़रात के इज्तिमाअ़ में शिर्कत का अन्दाज़ देख कर मुझे अपनी पिछली ज़िन्दगी याद आ गई ! मैं ने सोचा कि अपनी **आपबीती** गोश गुज़ार करूं कि शायद आप लोगों को इस में कुछ **इ़ब्रत के म-दनी फूल मिल** जाएं। फिर उन्हों ने अपनी दास्ताने हिदायत निशान बयान करनी शुरूअ़ की **:** पहले पहल मेरी सिगरेट नोशी की आ़दत पड़ी और फिर बुरे दोस्तों की सोह़बत की नुहूसत ने मुझे चरस और हेरोईन जैसे मोहलिक नशे का आ़दी बना दिया, आह ! **मैं सोलह[16] साल तक नशे का आ़दी रहा।** येह बताते हुए उन की आवाज़ भर्रा गई, मगर बयान जारी रखते हुए कहा **:** मेरी बुरी आ़दतों से बेज़ार हो कर मुझे घर से निकाल दिया गया। मैं फ़ुटपाथ पर सोता और कचरे के ढेर से उठा कर या मांग कर खाता। आप को शायद यक़ीन न आए कि **मैं ने एक ही लिबास में सोलह साल गुज़ार दिये !** मेरी कैफ़िय्यत बिल्कुल एक पागल की त़रह़ हो चुकी थी !

एक मुक़द्दस रात का क़िस्सा है, ग़ालिबन वोह र-मज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब थी। मैं बद नसीब उसी गन्दी ह़ालत में बद मस्त एक गली के कोने में **कचरा कूंडी** के पास लैटा हुवा था

कि सलाम की आवाज़ पर चौंका ! जब आंखें मलते हुए देखा तो मेरे सामने **सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए दो[2] इस्लामी** भाई खड़े मुस्कुरा रहे थे उन्हों ने बड़ी **महब्बत** से मेरा नाम पूछा, शायद ज़िन्दगी में पहली बार किसी ने इतनी **महब्बत** से मुझे मुख़ातब किया था। फिर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हों ने शबे क़द्र की अ-ज़मत से मु-तअ़ल्लिक़ बड़ी प्यारी प्यारी बातें बताईं। मैं उन के अपनाइय्यत वाले अन्दाज़ और ह़ुस्ने अख़्लाक़ की बिना पर वैसे ही **मु-तअस्सिर** हो चुका था, मज़ीद उन की शहद से भी मीठी मीठी म-दनी गुफ़्त-गू तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गई, मैं उन के साथ मस्जिद की त़रफ़ चल पड़ा। मस्जिद के ग़ुस्ल ख़ाने में अपना मैला चिक्कट लिबास उतारा और ग़ुस्ल कर के साफ़ सुथरे कपड़े पहन कर **16 साल बा'द जब पहली बार मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ के लिये मैं ने निय्यत बांधी तो अपने आंसू न रोक सका, रो रो कर मैं ने नशे और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه घर वालों ने मुझे वापस ले लिया। मैं क़ादिरिय्या र-ज़विय्या सिल्सिले में दाख़िल हो कर ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का मुरीद बन गया। मैं ने येह निय्यत कर ली कि अब हर क़ीमत पर नशे की आ़दत छुड़ाऊंगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है । (جامع صغیر)

इस के लिये मुझे बड़ी आज़्माइशों से गुज़रना पड़ा, मैं तक्लीफ़ के बाइस चीख़ता, बुरी त़रह़ तड़पता, घर वाले मेरी येह ह़ालत देख कर रो पड़ते । बा'ज़ लोग मश्वरा देते कि हेरोईन का एक आध सिगरेट ही पी लो ! मगर मैं ने ऐसा न किया कि इस त़रह़ तो मैं फिर इस नुहूसत में गिरिफ़्तार हो जाऊंगा बल्कि घर वालों से कहता कि ज़रूरतन मुझे चारपाई से बांध दिया करो । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता बेहतरी आने लगी और मुझे नशे से मुकम्मल त़ौर पर नजात मिल गई और मैं आज **दा'वते इस्लामी** का एक अदना सा मुबल्लिग़ हूं । उन की **दास्ताने इब्रत निशान** सुन कर हम सब अश्कबार हो गए, हम ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए । मैं येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना कराची के एक डिवीज़न के **म-दनी इन्आ़मात** के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं ।

छोड़ें बद मस्तियां, और नशे बाज़ियां जामे उल्फ़त पियें, क़ाफ़िले में चलो
ऐ शराबी तू आ, आ जुवारी तू आ सब सुधरने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुफ़्र के ऐवानों में खलबली

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन[3] साल तक इशाअ़ते इस्लाम के लिये **ख़ुफ़्यतन** (या'नी छुप कर) **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाई। फिर जब हुक्मे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से अ़लल ए'लान इस्लाम का पैग़ाम देना शुरूअ़ किया और बुत परस्ती की मज़म्मत बयान करने लगे तो **कुफ़्र के ऐवानों में खलबली पड़ गई।** सरदाराने क़ुरैश एक वफ़्द की सूरत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब के पास आए और अपनी शिकायत पेश की, कि आप के भतीजे साहिब हमारे मा'बूदों को बुरा भला कहने के साथ साथ हमारे आबाओ अज्दाद को गुमराह और हम लोगों को अह़मक़ ठहराते हैं, आप बराए मेहरबानी उन को समझा दीजिये कि वोह ऐसा न करें, अगर आप समझा नहीं सकते तो बीच में से हट जाइये हम ख़ुद उन्हें समझ लेंगे। अबू त़ालिब अगर्चे ईमान तो न लाए लेकिन अपने भतीजे या'नी सय्यिदुना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बेह़द मह़ब्बत करते थे लिहाज़ा क़ुरैश के सरदारों को नरमी के साथ समझा बुझा कर रुख़्सत कर दिया।

सीधे हाथ में सूरज.....

दा'वते इस्लाम का सिल्सिला ज़ोरो शोर से जारी रहा, चुनान्चे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के अन्दर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ बुग़्ज़ो अ़दावत की आग मज़ीद भड़क उठी, वोह फिर वफ़्द बना कर अबू त़ालिब के पास आए और धमकी आमेज़ लहजे में कहने लगे : ''अबू त़ालिब ! हम ने तुम से कहा था कि अपने भतीजे को समझा दो मगर तुम ने उन को नहीं समझाया, हम अपने मा'बूदों और आबाओ अज्दाद की तौहीन बरदाश्त नहीं कर सकते, हम तुम्हारी इ़ज़्ज़त करते हैं, तुम उन को अब भी रोक दो, अगर नहीं रोकना चाहते तो तुम भी हमारे साथ मुक़ाबले के लिये तय्यार हो जाओ ताकि दोनों[2] फ़रीक़ में से एक का फ़ैसला हो जाए।'' वोह लोग येह धमकी दे कर चले गए। अबू त़ालिब ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुला कर अ़र्ज़ की : ''ऐ मेरे प्यारे भतीजे ! क़ौम ने मुझे आप के बारे में येह येह शिकायात की हैं, मेहरबानी कर के बाज़ आ जाइये। अपने आप पर भी और मुझ पर भी रह़्म कीजिये।'' येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : **''ऐ मेरे चचा ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर वोह लोग मेरे सीधे हाथ में सूरज और उलटे हाथ में चांद भी ला कर रख दें, जब भी मैं इस काम को हरगिज़ हरगिज़ न छोड़ूंगा यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे (या'नी इस्लाम**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

को) ग़ालिब कर दे या मैं इस काम में अपनी जान दे दूं।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े और वापस जाने लगे, तो अपने प्यारे भतीजे صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल देख कर अबू त़ालिब को जोश आ गया और बुला कर कहने लगे : "ऐ भतीजे صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ूब दिल खोल कर अपने दीन की तब्लीग़ कीजिये, अहले कुरैश आप का बाल भी बीका न कर सकेंगे।"

(اَلسِّيْرَةُ النَّبَوِيَّة لِابن هَشَّام ص١٠٣، ١٠٤ دارالكتب العلمية بيروت)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया ! आमिना के लाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल किस क़दर ज़बर दस्त था। दुन्या की कोई त़ाक़त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दा'वते इस्लाम से न हटा सकती थी।

वोह बिजली का कड़का था या सौते हादी
अ़रब की ज़मीं जिस ने सारी हिला दी

बदनाम करने की साज़िश

मन्क़ूल है कि अहले कुरैश ने एक इज्लास किया जिस में इस बात पर इज़्हारे तश्वीश किया गया कि अब ह़ज का मौसिमे बहार आ रहा है और लोग दुन्या के गोशे गोशे से यहां आएंगे, चूंकि सरकारे दो[2]

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **खुल्लम खुल्ला** नेकी की दा'वत दे रहे हैं लिहाज़ा लोग इन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुनेंगे और सुनेंगे तो मानेंगे भी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गिरवीदा हो जाएंगे । लिहाज़ा इस की रोक थाम की एक ही सूरत है और वोह येह कि हम **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ूब बदनाम कर दें ताकि लोग आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **मु-तनफ़्फ़िर** हो जाएं और सिरे से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बात ही न सुनें और ज़ाहिर है जब बात ही न सुनेंगे तो माइल भी न होंगे । चुनान्चे इस मश्वरे के बा'द कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) मजनून, काहिन और जादूगर मश्हूर करना शुरूअ़ कर दिया । लेकिन क़ुरबान जाइये ! **मुबल्लिगे़ आ'ज़म, नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मुह्तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बुलन्द हिम्मती पर कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन की वाहियात व ख़ुराफ़ात से ज़र्रा बराबर न घबराए मुसल्सल नेकी की दा'वत में मश्ग़ूल ही रहे ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ बदनाम करने की बा क़ाइदा मुहिम चलाई गई फिर भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाए सबात को ज़र्रा

बराबर लग़्ज़िश न आई, मुसल्सल **नेकी की दा'वत** का काम जारी ही रखा। इस से हमें भी येह दर्स मिला कि ख़्वाह कोई इल्ज़ाम डाले, मज़ाक़ उड़ाए, बद अल्क़ाबी से पुकारे, हमारी आवाज़ की नक़्ल उतारे, कैसा ही सताए मगर हमें सुन्नतों भरा **म-दनी माहोल** नहीं छोड़ना चाहिये, सुन्नतों पर अ़मल करते हुए दूसरों तक भी **नेकी की दा'वत** पहुंचाते रहना चाहिये। जो हिम्मत हारे बिग़ैर जानिबे मन्ज़िल रवां दवां रहता है बिल आख़िर मन्ज़िल पा ही लेता है।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

दिल का मरीज़ ठीक हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत का जज़्बा बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक "म-दनी बहार" पेशे ख़िदमत है **: बाबुल मदीना** कराची के एक इस्लामी भाई को दिल की तक्लीफ़ हुई, डॉक्टर ने बताया कि आप के दिल की दो[2] नालियां बन्द हैं, एन्जियोग्राफ़ी **(ANGIOGRAPHY)** करवा लीजिये। इ़लाज पर हज़ारहा रुपै का ख़र्च आता था, येह बेचारे ग़रीब घबराए हुए थे, एक इस्लामी भाई ने उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के वहां दुआ मांगने की तरग़ीब दिलाई, चुनान्चे वोह तीन[3] दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बने, वापसी पर त़बीअ़त को बेहतर पाया। जब टेस्ट करवाए तो तमाम रिपोर्टें दुरुस्त थीं, डॉक्टर ने ह़ैरत से पूछा कि तुम्हारे दिल की दोनों[2] बन्द नालियां ख़ुल चुकी हैं, आख़िर येह कैसे हुवा ? जवाब दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ करने की ब-र-कत से मुझे दिल के मोहलिक मरज़ से नजात मिल गई है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो *सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो*
दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो *पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आह ! सद आह ! हमारे दिलों के ताजदार, दो[2] आ़लम के सरदार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्लाम के परचार की ख़ात़िर कैसे कैसे मज़ालिम सहे, जौरो जफ़ा की तेज़ व तुन्द आंधियों में भी कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी जगह से न हिले, कुफ़्फ़ारे बदकार के ज़ुल्मो सितम की एक दास्तान पढ़िये और तड़पिये :

कुफ़्फ़ार के नरग़े में.....

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने एक बार दो[2] जहां के ताजदार, नबियों के सरदार, **मह़बूबे परवर्दगार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घेर लिया वोह सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घसीटते और धक्के मारते और कहते जाते थे कि तुम ही वोह शख़्स हो जो सिर्फ़ एक मा'बूद की इ़बादत का हुक्म देते हो । **ह़ज़रते मौला अ़ली** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم (जो कि उन दिनों काफ़ी कम उ़म्र थे) फ़रमाते हैं कि इतने में **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मर्दाना वार आगे बढ़े और कुफ़्फ़ार को मारते, पीटते, गिराते, हटाते सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक जा पहुंचे और सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन ज़ालिमों के नरग़े से निकाल लिया । उस वक़्त सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मुबारक ज़बान पर पारह 24 **सू-रतुल मुअ्मिन** की आयत नम्बर 28 जारी थी :

اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो

कि वोह कहता है कि मेरा रब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से लाए।) अब कुफ़्फ़ारे बद किरदार ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पकड़ लिया। उन के सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक के बहुत से बाल नोच डाले और मार मार कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को शदीद ज़ख़्मी कर दिया।

(شَرْحُ الزُّرْقَانی عَلَی الْمَوَاهِبِ اللَّدُنِّيَّة ج ۱ ص ٤٦٨۔٤٧٠)

बहर ह़ाल कुफ़्फ़ारे जफ़ाकार ने बड़ा ज़ोर लगाया, ख़ूब धम्कियां दीं कि किसी त़रह़ भी सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस्लाम के परचार से बाज़ आ जाएं मगर हमारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दीने इस्लाम का काम करते ही रहे। जूं जूं काम बढ़ता रहा तूं तूं कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार के ग़ैज़ो ग़ज़ब में भी इज़ाफ़ा होता रहा। वोह हर साअ़त माहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अज़िय्यत पहुंचाने की ताक में रहते थे।

चादर का फन्दा

कुफ़्फ़ारे ना बकार एक बार का'बए पुर अन्वार के साए में बैठे हुए थे और सरकारे आ़लम मदार, दो[2] जहां के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلی)

(मक़ामे इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़रीब) मश्ग़ूले नमाज़ थे । उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ नामी काफ़िर ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गरदन मुबारक में चादर का फन्दा डाल कर सख़्ती के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक गला घूंटना शुरूअ़ किया । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ दौड़े आए और उसे (या'नी उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ को) पीछे हटाया और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मुबारक ज़बान पर पारह 24 **सू-रतुल मुअ्मिन** की आयत नम्बर 28 जारी थी :

اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है कि मेरा रब **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) है और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से लाए ।)

(صَحِيحُ الْبُخَارى ج٣ص٣١٦حديث٤٨١٥دارالكتب العلمية بيروت)

एक रोज़ दो[2] जहां के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने काशानए अत़्हर से बाहर तशरीफ़ लाए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रास्ते में जो भी काफ़िर मिलता ख़्वाह ग़ुलाम होता या आज़ाद वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ देता । (اَلسِّيرَةُ النَّبَوِيَّة لِابن هَشَّام ص١١٣)

आह ! इमामुल आ़बिदीन, सुल्त़ानुस्साजिदीन, सय्यिदुस्सालिह़ीन, सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दास्ताने ग़म निशान पर दिल ख़ून रोता है । इस क़दर मज़ालिम सहने के बा वुजूद भी वल्वलए तब्लीगे़ इस्लाम और नमाज़ों का एहतिमाम **अल्लाह** ! **अल्लाह** !

ह़रम की सरज़मीं पर आप पढ़ते थे नमाज़ अक्सर
हमेशा उस घड़ी की ताक में रहते थे बद गोहर
कोई आक़ा की गरदन घूंटता था कस के चादर में
कोई बद बख़्त पथ्थर मारता था आप के सर में

ऊंटनी का बच्चादान

एक दिन हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का'बए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के क़रीब नमाज़ पढ़ रहे थे और कुफ़्फ़ारे कुरैश एक जगह बैठे हुए थे । उन में से एक ने कहा कि तुम इन को देख रहे हो ? फिर बोला : तुम में कौन ऐसा है जो फुलां क़बीले से ज़ब्ह़ कर्दा ऊंटनी का बच्चादान उठा लाए और जब येह सज्दे में जाएं तो इन के कन्धों पर रख दे ? इस पर बद बख़्त उ़क़्बा बिन अबी मुईत़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

उठ कर चल दिया और बच्चादान (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) ला कर **रह़मते आ़-लमिय्यान** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दोनों[2] मुबारक शानों के दरमियान रख दी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसी ह़ाल में रहे और सरे मुबारक सज्दे से न उठाया और वोह सब के सब क़ह्क़हे मार कर हंसते रहे, यहां तक कि **ख़ातूने जन्नत** सय्यिदह फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا (जिन की उ़म्र उस वक़्त ब मुश्किल आठ साल थी) आई और उन्हों ने ह़बीबे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पुश्ते अत़्हर से उस गन्दगी को उठा कर फेंका । तब **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे अक़्दस उठाया और अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में अ़र्ज़ गुज़ार हुए :- या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन कुरैशियों को पकड़ । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू अबू जह्ल बिन हश्शाम, उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, वलीद बिन उ़त्बा, उमय्या बिन ख़लफ़ और उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ को पकड़ । इस ह़दीसे पाक के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने इन को बद्र के रोज़ मक़्तूल (या'नी क़त्ल शुदा) देखा । वोह बद्र के कूंएं में औंधे मुंह गिरे हुए थे । (صَحِیحُ الْبُخاری ج۱ ص۱۰۲ حدیث ۲٤۰)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب،ترہیب)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *की क़सम*
कि जिस को तुम ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, **शहन्शाहे नुबुव्वत,** मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशाए बज़्मे **जन्नत** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जिस ने मेरी सुन्नत से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।

(مِشْکَاۃُ الْمَصَابِیح، ج۱ص۵۵حدیث۱۷۵دارالکتب العلمیۃبیروت)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या नबिय्यल्लाह" के 9 ह़ुरूफ़ की निस्बत से नाख़ुन काटने के 9 म-दनी फूल

﴾1﴿ जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना **मुस्तह़ब** है। हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये (دُرِّمُختار ج۹ص۶۶۸)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُالْقَوِی फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : जो **जुमुआ़** के रोज़ नाखुन तरश्वाए (काटे) **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुआ़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक । एक रिवायत में येह भी है कि जुमुआ़ के दिन नाखुन तरश्वाए (काटे) तो **रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे** (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتَار ج۹ص۶۶۸, बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 225,226) ﴾2﴿ हाथों के नाखुन काटने के मन्क़ूल त़रीक़े का खुलासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाखुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये । अब उलटे हाथ की छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये । अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाखुन काटा जाए । (دُرِّمُختار ج۹ص ۶۷۰، اِحْیاءُ الْعُلُوم ج۱ص۱۹۳) ﴾3﴿ पाउं के नाखुन काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये फिर उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लिया समेत नाखुन काट लीजिये । (اَیضًا)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

《4》 जनाबत की ह़ालत (या'नी गुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाखु़न काटना मक्रूह है। (عالمگیری ج۵ ص۳۰۸) 《5》 दांत से नाखु़न काटना मक्रूह है और इस से बरस या'नी कोढ़ के मरज़ का अन्देशा है। (اَیضًا) 《6》 नाखु़न काटने के बा'द उन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी ह़रज नहीं। (اَیضًا) 《7》 नाखु़न का तराशा (या'नी कटे हुए नाखु़न) **बैतुल ख़ला** या गुस्ल ख़ाने में डाल देना मक्रूह है कि इस से **बीमारी** पैदा होती है। (اَیضًا) 《8》 बुध के दिन नाखु़न नहीं काटने चाहियें कि बरस या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस39 दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो इस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाखु़न रखना ना जाइज़ व मक्रूहे तह़रीमी है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा जिल्द 22 सफ़ह़ा 574, 685 मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये) 《9》 लम्बे नाखु़न शैत़ान की निशस्त गाह हैं या'नी इन पर शैत़ान बैठता है।

(اِتحافُ السَّادَۃ لِلزّبیدی ج۲ ص۶۵۳)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल

मदीना की मत्बूआ़ दो कुतुब ''बहारे शरीअ़त'' हिस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यत सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ।" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860